ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 4 | Issue 1 | January 2026
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i1.220

दक्षिण राजस्थान मे बदलता राजनीतिक परिदृश्य : विधानसभा चुनाव 2018 व 2023 में भारतीय ट्राइबल पार्टी व भारतीय आदिवासी पार्टी को प्राप्त मतों के सन्दर्भ में

राजेश कुमार[1], हरि सिंह गुर्जर[2]
[1,2] शोधार्थी, भूगोल विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
[2]Corresponding Author: hsgurjar1@gmail.com

सारांश-

यह शोध दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी राजनीतिक परिदृश्य और इसमें भारतीय आदिवासी पार्टी (BAP) और भारतीय ट्राइबल पार्टी (BTP) के उदय का विश्लेषण करता भारतीय ट्राइबल पार्टी की स्थापना 2015 में हुई और 2018 के विधानसभा चुनावों में उसने दक्षिणी राजस्थान में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। हालांकि, 2023 में BAP का गठन BTP से अलग होकर हुआ, जिसने 2023 के विधानसभा चुनाव में 24.55% मत प्राप्त किया और तीन सीटें जीतीं। राजस्थान के अनुसूचित क्षेत्र में इन क्षेत्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय दलों को मजबूती के साथ चुनौती दी है। पिछले दो विधानसभा चुनावों के परिणाम से पता चलता है की इन राष्ट्रीय दलों का अनुसूचित क्षेत्रों में वोट बैंक धीरे-धीरे क्षेत्रीय दलों की ओर स्थानांतरित हो रहा है। आने वाले समय में दक्षिणी राजस्थान की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की अहम भूमिका हो सकती है, जो आदिवासी अधिकारों के मुद्दों, भील प्रदेश के गठन, और अनुसूचित जनजातियों के आरक्षण में वृद्धि जैसे विषयों को प्रमुखता से उठाने का संकेत देती हैं।

प्रमुख शब्द- *राजनीतिक परिदृश्य, भारतीय आदिवासी पार्टी, भारतीय ट्राइबल पार्टी, अनुसूचित क्षेत्र, वोट बैंक।*

परिचय-

आदिवासी- भारतीय शब्द 'आदिवासी' हिंदी शब्द 'आदि' से निकला है, जिसका अर्थ है 'शुरुआत' या 'शुरुआती समय का', और 'वासी' शब्द का अर्थ है 'निवासी' (Beeman, M., & Chowdhry, G.) भारत में कई शिकारी, संग्रहकर्ता, किसान अभी भी खुद को 'आदिवासी' कहते हैं। Bates, C. (1995) चाहे उनकी संस्कृति कुछ भी हो या वे कितने समय से ऐसा कर रहे हों। स्लेश-बर्न कृषि करने वाले किसानों को लंबे समय तक 'आदिवासी' माना जाता था। Hockings, P. (2011)

'पिछड़े समुदाय' विषय पर आधुनिक सोच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 'पिछड़ा समुदाय' शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजों के समय से हुई 1918 के भारत सरकार अधिनियम के साथ शुरुआत करते हुए, अंग्रेजों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रांतीय विधानसभाओं में बैठने की अनुमति दी, जिनके पास कुछ क्षेत्रों में कानून बनाने की शक्ति थी। इन सभाओं में अधिकारियों और अन्य अंग्रेजों द्वारा नामित सदस्य थें, माना जाता है कि कुछ 'अनुसूचित क्षेत्रों' के कुछ समुदाय या तो इतने पिछड़े हुए थे या उत्पीड़ित थे कि वे ठीक से वोट का प्रयोग करने में सक्षम नहीं थे, इसलिए उनके प्रतिनिधियों को प्रशासन द्वारा नियुक्त किया जाना था। औपनिवेशिक शासन के राजनीतिक अवसरवाद में अपनी जड़ों के बावजूद, यह विचार कि 'आदिवासी' किसी तरह 'पिछड़े' थे, और खुद का प्रतिनिधित्व करने में असमर्थ थे, आज भी कायम है। Sinha, S. (1987). आदिवासियों की अवधारणा 1930 के दशक में इस शब्द को गढ़ने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं के अनुसार, 'आदिवासी' दक्षिण एशिया के मूल निवासी हैं। Renfrew, C. (1990)

भारत में जनजातियों को परिभाषित करने के दौरान उनकी पहचान का ध्यान रखा गया है। सामान्य बातचीत में जनजाति, अनुसूचित जनजाति, स्वदेशी लोग, वनवासी, आदिवासी और जन जैसे शब्दों का परस्पर उपयोग किया जाता है। K. Annamani Rao

भौगोलिक वितरण के आधार पर, भारत में जनजातीय समूहों की विशेषताओं के आधार पर तीन अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे कि उतरी-पूर्वी, मध्य और दक्षिणी।

अनुसूचित जनजाति- अनुसूचित जनजाति शब्द की परिभाषा संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में इस प्रकार की गई है ऐसी जातियां या जनजातीय समुदायों के अंतर्गत भागों या समूह जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 राष्ट्रपति सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा जनजाति समुदायों को निर्दिष्ट करने के लिए अधिकृत करता है जिन्हें इस संविधान के उद्देश्य से अनुसूचित जनजाति माना जाएगा और संसद कानून द्वारा अनुसूचित जनजातियों की सूची में शामिल करने एवं बाहर निकलने का अधिकार भी देता है।

अनुसूचित क्षेत्र- संविधान के पांचवी अनुसूची के भाग-ग के अनुसार "अनुसूचित क्षेत्र" ऐसे क्षेत्र सम्बंधित हैं, जिन्हें राष्ट्रपति आदेश के द्वारा अनुसूचित क्षेत्र घोषित करें। संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त जनजातियों को अधिसूचित जनजातियों के रूप में जाना जाता है भारत में लगभग 645 विशिष्ट जनजातीय हैं।

भारत सरकार के अधिसूचना दिनांक 12.2.1981 एवं संशोधित अधिसूचना दिनांक 19.5.2018 से विनिर्दिष्ट क्षेत्रों को राजस्थान राज्य के भीतर अनुसूचित क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया हैं।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व- देश की संसद, राज्य विधानसभाओं, स्थानीय निकायों (नगर निकाय, पचायतीराज) पर बड़ी संख्या में सीटें अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित हैं। एससी और एसटी उम्मीदवारों का चुनाव संयुक्त या मिश्रित (सभी मतदाता) मतदाताओं द्वारा होता है।

भारत की संसद में प्रतिनिधित्व किए गए 543 निर्वाचन क्षेत्रों में से 84 (15.47%) अनुसूचित जाति के लिए और 47 (8.66%) अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। लोक सभा में अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए स्थानों का आवटन संबंधित राज्य में अनुसूचित जाति और जनजाति के कुल सीटों के अनुपात के आधार पर किया जाता है

सीमांकन आयोग द्वारा 25.1.2006 राजस्थान में 25 लोकसभा सीटें और 200 सीटें विधानसभा के लिए निर्धारित की गयी। लोकसभा की 25 सीटों में से 4 सीटें अनुसूचित जाति व 3 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। राजस्थान में 200 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से 34 सीटें अनुसूचित जाति व 25 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। Jalan, S. (2019), Election Commission , Rajasthan.

भारतीय आदिवासी पार्टी-

भारतीय आदिवासी पार्टी दक्षिणी राजस्थान के जनजातियें क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण राजनैतिक दल के रूप में उभर रही है, जो राज्य के आदिवासी राजनीतिक परिदृश्य में एक ऐतिहासिक बदलाव को चिन्हित करती है। आदिवासी समुदायों के अधिकारों और मुद्दों पर गठित भारतीय आदिवासी पार्टी भारतीय ट्राइबल पार्टी (बीटीपी) से अलग हो कर सितंबर 2023 में राजस्थान की राजनीति में प्रवेश किया। भारतीय आदिवासी पार्टी ने 2023 के राजस्थान के विधानसभा चुनाव में तीन सीटों पर जीत हासिल करते हुए उल्लेखनीय शुरुआत की। इस उपलब्धि ने क्षेत्रीय राजनीति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाली पार्टी के रूप में मान्यता दिलायी। Saini, Sachin (2024).

भारतीय आदिवासी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. जितेंद्र मीणा ने द मुकनायक के साथ विशेष साक्षात्कार में बताया कि उन्हें कई जनजातियें समूहों और संगठनों को मंच पर एकजुट किया ताकि उनकी मांगो को मजबूती से रखा जा सके। Pillai, Geetha Sunil (2024).

10 सितंबर 2023 को राजस्थान के डूंगरपुर में आदिवासी प्रेरणा स्थल टाटिया भील खेल मैदान में अपना स्थापना दिवस मनाता है। अपनी स्थापना के कुछ समय बाद बाप ने 2023 के राजस्थान और मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में चुनाव लड़ा जिसमें कुल 35 उम्मीदवारों (राजस्थान-27 व मध्यप्रदेश-8) में से चार सीटों (राजस्थान-3 व मध्यप्रदेश-1) जीत हासिल की।

शोध प्रविधि (Methodology)-

यह अध्ययन मुख्य रूप से दक्षिण राजस्थान के अनुसूचित(TSP) क्षेत्र में विधानसभा चुनाव 2018 व 2023 के परिणाम पर केंद्रित हैं। भारतीय ट्राइबल पार्टी और भारतीय आदिवासी पार्टी का अनुसूचित क्षेत्र की राजनीति में प्रभाव से सम्बंधित हैं। इसके विश्लेषण में अवलोकन विधि व द्वितीयक आंकड़े लिए गये हैं। केंद्र व राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन, पत्र-पत्रिका, भारतीय निर्वाचन आयोग, मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय, राजस्थान जनगणना निर्देशालय, शोध पत्र, शोध प्रबंधो, प्रमुख पुस्तकों, समाचार पत्रों और लेखों से द्वितीयक आंकड़े लिए गए हैं। इनके विश्लेषण में मानचित्र, सारणियों का प्रयोग किया गया हैं।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)- अनुसूचित क्षेत्र (TSP Area)

राजस्थान के दक्षिण में स्थित 8 जिलों के 45 तहसीलों के 5696 ग्रामों को मिलाकर अनुसूचित क्षेत्र निर्मित किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना इस क्षेत्र की जनसंख्या 64.64 लाख है जिसमें जनजाति जनसंख्या 45.52 लाख है, जो इस क्षेत्र की 70.42% जनसंख्या है। इस क्षेत्र में आदिवासी जनजाति में भील, मीणा, गरासिया व डामोर प्रमुख है।

अनुसूचित क्षेत्र की अधिसूचना 19.5.2018 के पश्चात आठ जिलों में से बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ के संपूर्ण जिले उदयपुर, सिरोही राजसमंद, चित्तौड़गढ़, पाली जिले के आंशिक क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। (चित्र1) जिसमें 4 लोकसभा क्षेत्र व 17 विधानसभा क्षेत्र आते हैं, उदयपुर और बांसवाडा लोकसभा क्षेत्र आरक्षित क्षेत्र है व अनारक्षित लोकसभा क्षेत्र चित्तौड़गढ़ और जालोर में अनुसूचित क्षेत्र की एक-एक विधानसभा (क्रमशः प्रतापगढ़ व पिंडवाड़ा-आबू) क्षेत्र आते हैं। 08/02/2024 तक कुल 4647649 मतदाता हैं। (तालिका-1)

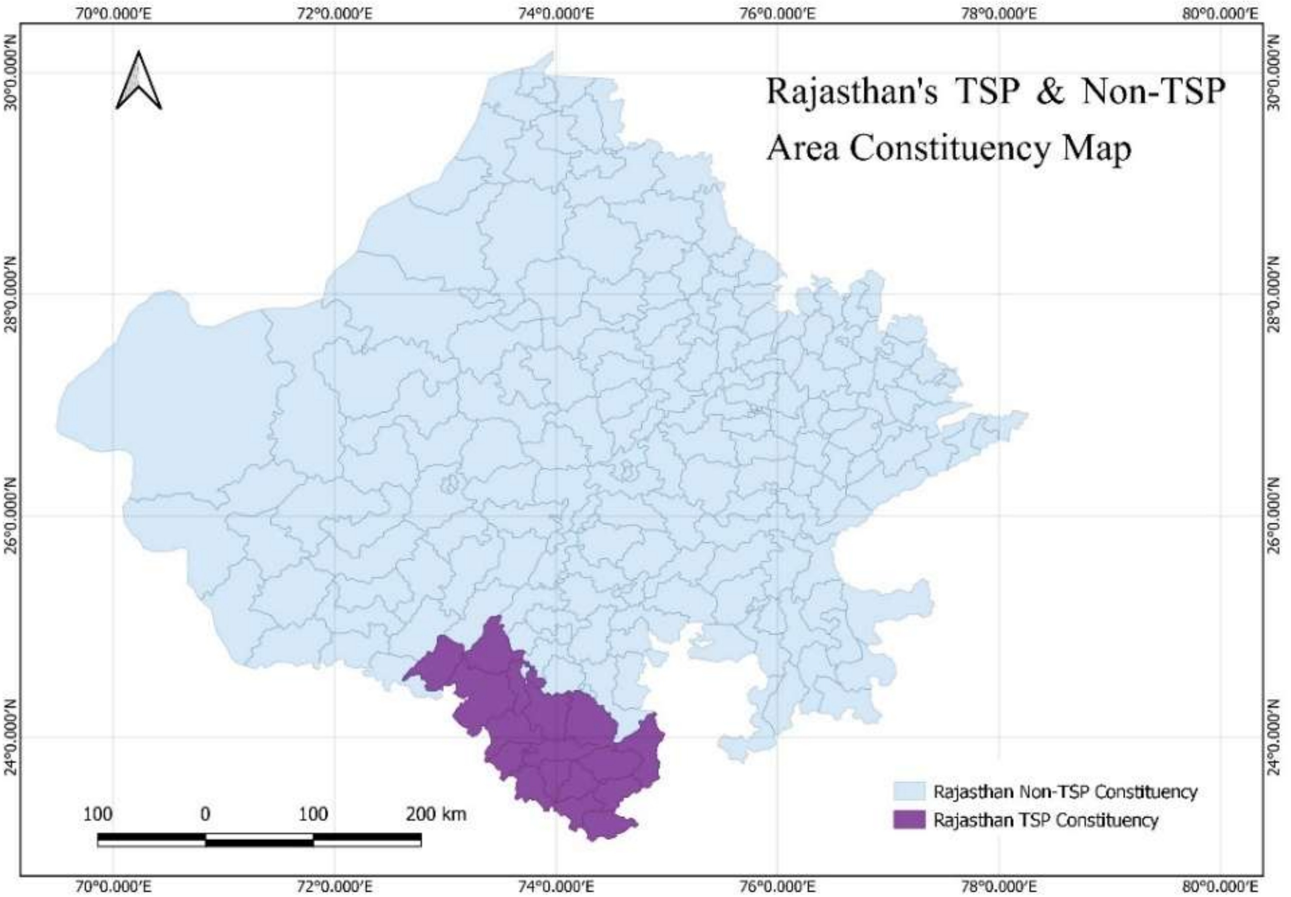

चित्र-1 चुनाव आयोग के आंकड़ों द्वारा निर्मित

तालिका-1 अनुसूचित क्षेत्र में लोकसभा एंव विधानसभा क्षेत्र में मतदाता संख्या (प्रकाशन- 08.02.2024)

लोकसभा क्षेत्र	**विधानसभा क्षेत्र**	**मतदाता**
उदयपुर(जा.ज.अ)	गोगुन्दा(जा.ज.अ)	266290
	झाड़ोल(जा.ज.अ)	275281
	खेरवाड़ा(जा.ज.अ)	298676
	उदयपुर ग्रामीण(जा.ज.अ)	287444
	सलूम्बर(जा.ज.अ)	295273
	धरियावद (जा.ज.अ)	276208
	आसपुर(जा.ज.अ)	271392
	कुल मतदाता	1970564
बांसवाडा(जा.ज.अ)	डूंगरपुर (जा.ज.अ)	262809
	सागवाड़ा (जा.ज.अ)	278041
	चौरासी (जा.ज.अ)	251831
	घाटोल (जा.ज.अ)	286171
	गढ़ी (जा.ज.अ)	290925
	बांसवाडा (जा.ज.अ)	283098
	बागीदोड़ा (जा.ज.अ)	266882
	कुशलगढ़ (जा.ज.अ)	267014
	कुल मतदाता	2186771
चितौड़गढ़	प्रतापगढ़ (जा.ज.अ)	261699
जालोर	पिंडवाड़ा(जा.ज.अ) आबू-	228615
कुल मतदाता		4647649

स्रोत- भारतीय निर्वाचन आयोग

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक एवं सामाजिक- आर्थिक महत्व रखने वाला अनुसूचित क्षेत्र राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। जो भौगोलिक व् ऐतिहासिक दृष्टि से मेवाड़ और वागड़ क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। मेवाड़ अपने भव्य इतिहास और संपन्न पर्यटन के साथ वागड़ की आदिवासी विरासत और विकसित ग्रामीण अर्थव्यवस्था को साथ लिए हुए हैं पर्यावरण पर्यटन, खनिज संसाधन, पारंपरिक कृषि और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से दोनों क्षेत्र एक-दुसरे से जुड़े हुए हैं।

मेवाड़- मेवाड़ भारतीय व विश्व इतिहास में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और राजपूत वीरता के इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। जो राजस्थान के उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा और प्रतापगढ़ जिलों में फैला हुआ है। इस क्षेत्र में सभी समुदाय की आबादी निवास करती है, मेवाड़ में राजस्थान के 26 विधानसभा क्षेत्र आते है, जिसमें में 6 विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। मेवाड़ क्षेत्र भारतीय जनता पार्टी का बड़े वोट बैंक वाला क्षेत्र हैं। मेवाड़ क्षेत्र की राजनीति का राजस्थान की राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। Gurjar, H. S. & Singh, P. (2022).

वागड़- वागड़ क्षेत्र मूल रूप से राजस्थान के डूंगरपुर एवं बांसवाडा जिलों से सम्बंधित है। वागड़ मुख्य रूप से एक आदिवासी संस्कृति से समृद्ध क्षेत्र है, जिसमें भील, मीणा, गरासिया और डामोर जनजातियां निवास करती है। यहाँ की अधिकांश आबादी प्राथमिक क्रिया-कलाप (कृषि, पशुचारण और वन संसाधन) पर निर्भर रहती है। जो पहाड़ियों और वन क्षेत्रों की विशेषता है। यह क्षेत्र अपनी समृद्ध आदिवासी विरासत के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र अभी भी अपेक्षाकृत अविकसित है, आदिवासी आबादी के बीच उच्च गरीबी दर

है। वागड़ क्षेत्र में 10 विधानसभा क्षेत्र आते है, और सभी विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं वागड़ क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी का प्रभाव अधिक रहता है। Gurjar, H. S. & Singh, P. (2024).

26 जनवरी 2008 को राजस्थान का 33वां जिला प्रतापगढ़ को बनाया गया। चितौड़गढ़, उदयपुर और बांसवाड़ा जिलों की तहसीलों को मिला कर प्रतापगढ़ जिले का निर्माण किया गया। जिसमें दो विधानसभा क्षेत्र प्रतापगढ़ व धरियावद आते हैं।

विश्लेषण- विधानसभा चुनाव 2018

अनुसूचित क्षेत्र (TSP Area) में 2018 के विधानसभा चुनाव में दक्षिण राजस्थान की अनुसूचित क्षेत्र के 17 विधानसभा सीटों पर कुल मतदान 75.92% हुआ था, जिसमें से भारतीय जनता पार्टी को 41.26%, कांग्रेस पार्टी को 36.64% मतदाताओं ने वोट दिया। भारतीय ट्राइबल पार्टी ने 10 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे और 8.04% मत प्राप्त हुआ एवं दो विधानसभा सीटों पर जीत दर्ज की। (तालिका-2)

तालिका-2 अनुसूचित क्षेत्र में विधानसभा चुनाव 2018 में राजनैतिक दलों को प्राप्त मत

TSP Area	कुल मतदान	BJP	INC	BTP
	75.92%	41.26%	36.64%	8.05%

स्रोत- भारतीय निर्वाचन आयोग

भारतीय ट्राईबल पार्टी (Bhartiya Tribal Party)-

2015 में स्थापित भारतीय ट्राईबल पार्टी ने 2018 के राजस्थान के विधानसभा चुनाव में कुल 11 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ा जिसमें से डूंगरपुर जिले की चौरासी विधानसभा सीट से युवा उम्मीदवार राजकुमार रोत ने जीत दर्ज की व डूंगरपुर की ही सांगवाड़ा विधानसभा सीट से राम प्रसाद ने जीत दर्ज की, (चित्र-2) जबकि आसपुर विधानसभा सीट से उमेश कुमार मीणा द्वितीय स्थान पर रहे व तृतीय स्थान पर तीन उम्मीदवार रहे। (तालिका-3)

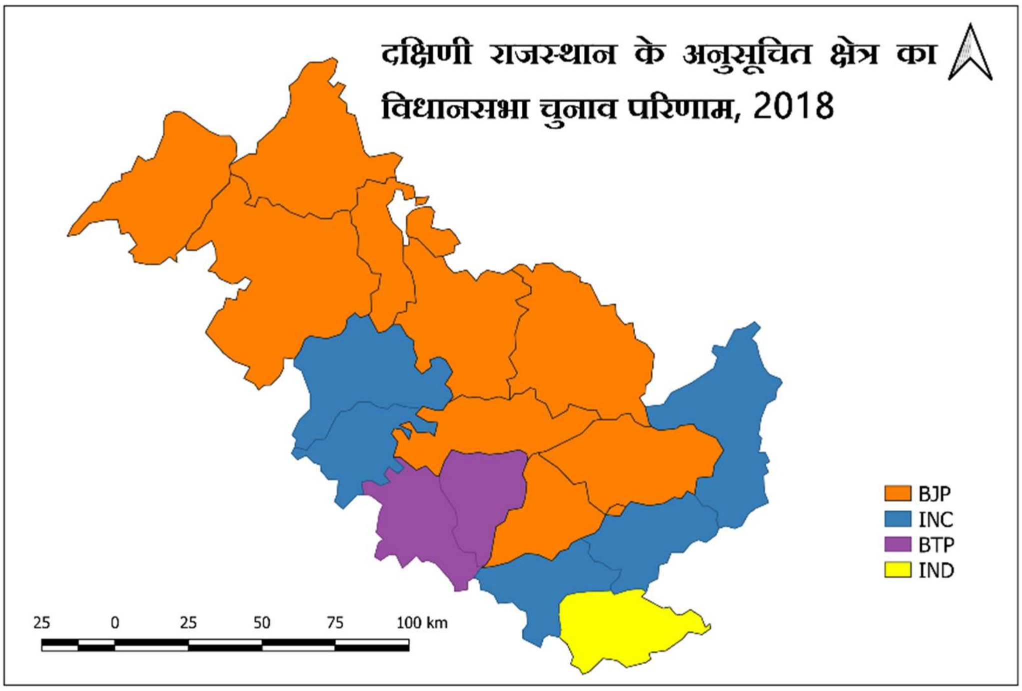

चित्र 2-चुनाव आयोग के आंकड़ों द्वारा निर्मित

तालिका -3 राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018 व 2023 में भारतीय ट्राईबल पार्टी का चुनावी परिणाम

विधानसभा क्षेत्र	2018 के विधानसभा चुनाव	Rank	2023 के विधानसभा चुनाव	Rank
कुंभलगढ़	622(0.45%)	9		
बागीदोड़ा	9538(4.82%)	3	8517(3.82%)	4
गढ़ी	23093(11.22%)	3	1609(0.71%)	10
घाटोल	4660(2.14%)	4	1867(0.67%)	6
चौरासी	64119(38.22%)	1(Won)	3318(1.61%)	6
सागवाड़ा	58406(33.59%)	1(Won)	3242(1.57%)	6
आसपुर	51732(31.84%)	2		
डूंगरपुर	13004(7.98%)	3	1519(0.78%)	8
धारियावाद	4406(2.27%)	6		
खेरवाड़ा	20383(10.60%)	3	53290(24.31%)	3
पिंडवाड़ा-आबू	5137(3.68%)	4		
झाड़ोल			4204(1.92%)	6
सलुम्बर			1105(0.52%)	10
बांसवाडा			1387(0.6%)	7
कुशलगढ़			981(0.42%)	9

स्रोत- भारतीय निर्वाचन आयोग

वही पार्टी ने 2023 के विधानसभा चुनाव में भी 11 सीटों पर चुनाव लड़ा जिनमें से कोई भी उम्मीदवार जीत दर्ज कर नहीं पाया एवं तीसरे स्थान पर भी एकमात्र उम्मीदवार खेरवाड़ा विधानसभा सीट से प्रवीण कुमार परमार रहे। इस का एक बड़ा कारण है ,भारतीय ट्राईबल पार्टी के कार्यकर्त्ता और उम्मीदवारों ने पार्टी से अलग होकर भारतीय आदिवासी पार्टी का गठन किया और के 2023 विधानसभा चुनाव भारतीय आदिवासी पार्टी के बैनर के नीचे लड़ा गया।

विधानसभा चुनाव 2023

अनुसूचित क्षेत्र (TSP Area) में 2023 के विधानसभा चुनाव में औसत मतदान 78.52% हुआ। जिसमें भारतीय जनता पार्टी व कांग्रेस पार्टी का मतदान प्रतिशत 2018 के विधानसभा चुनाव की तुलना में कम होकर क्रमश: 34.12%, 32.19% रह गया। (तालिका-4) भारतीय ट्राइबल पार्टी का जनाधार 2.23% व भारतीय ट्राइबल पार्टी से अलग होकर एक नए राजनैतिक दल के रूप में

भारतीय आदिवासी पार्टी का उदय हुआ जिसने अपने पहले ही चुनाव में 24. 55% वोट हासिल किये व 3 विधानसभा सीट जीत दर्ज की। (चित्र-3)

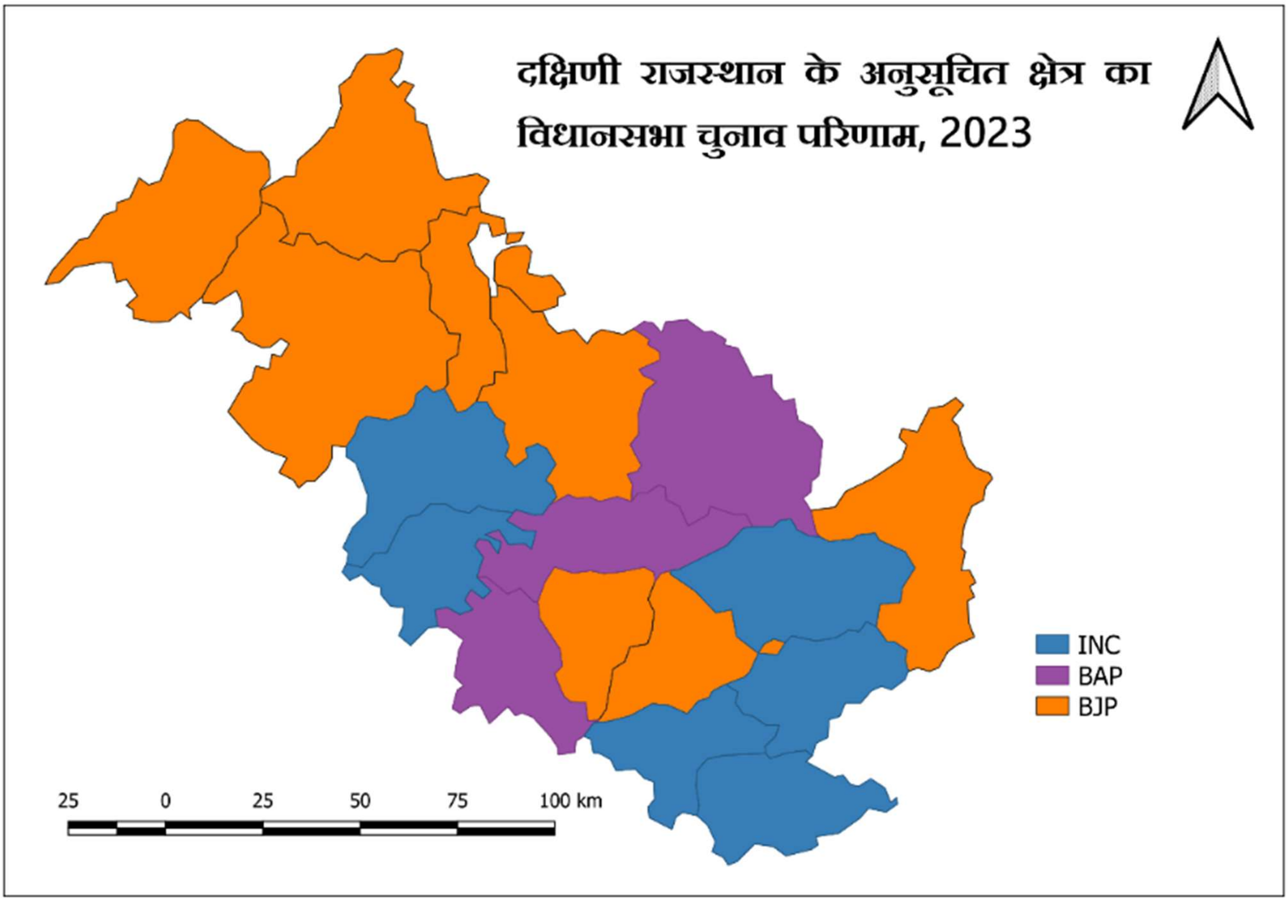

चित्र 3- चुनाव आयोग के आंकड़ों द्वारा निर्मित

तालिका-4 अनुसूचित क्षेत्र में विधानसभा चुनाव 2023 में राजनैतिक दलों को प्राप्त मत

TSP Area	कुल मतदान	BJP	INC	BTP	BAP
	78.52%	34.12%	32.20%	2.23%	24.55%

स्रोत- भारतीय निर्वाचन आयोग

भारतीय आदिवासी पार्टी (Bhartiya Aadivasi Party)

भारतीय ट्राइबल पार्टी से अलग होकर बनी भारतीय आदिवासी पार्टी ने 2023 के राजस्थान के विधानसभा चुनाव में 17 विधानसभा क्षेत्रों पर अपना भाग्य आजमाया, जिसमें से भारतीय आदिवासी पार्टी ने अपने प्रथम प्रयास में ही तीन विधानसभा सीटों पर कब्जा जमाया, डूंगरपुर जिले के चौरासी विधानसभा सीट से राजकुमार रोत, आसपुर विधानसभा सीट से उमेश कुमार मीणा तथा प्रतापगढ़ जिले की धारियावाद विधानसभा सीट से थावरचंद विजय रहे व भारतीय आदिवासी पार्टी के 4 उम्मीदवार द्वितीय स्थान पर रहे तथा 9 उम्मीदवार तृतीय स्थान पर रहे। (तालिका-5)

तालिका-5 राजस्थान विधानसभा चुनाव 2023 में भारतीय आदिवासी पार्टी का चुनावी परिणाम

विधानसभा क्षेत्र	2023 के विधानसभा चुनाव	Rank
बागीदोड़ा	60387(27.09%)	2
गढ़ी	43548(19.19%)	3
घाटोल	84644(35.04%)	2
चौरासी	111150(53.92%)	1(Won)
सागवाड़ा	63176(30.65%)	2
आसपुर	93742(46.7%)	1(Won)
डूंगरपुर	50285(25.95%)	2
धारियावाद	83655(37.67%)	1(Won)
खेरवाड़ा	16189(7.39%)	4
पिंडवाड़ा-आबू	23894(14.82%)	3
झाड़ोल	44503(20.34%)	3
सलुम्बर	51691(24.23%)	3
बांसवाडा	34666(15.11%)	3
कुशलगढ़	33758(14.37%)	3
प्रतापगढ़	62023(28.33%)	3
गोगुंदा	8094(4.11%)	3
उदयपुर ग्रामीण	25172(11.73%)	3

स्रोत- भारतीय निर्वाचन आयोग

2024 के लोकसभा चुनाव के साथ बागीदोड़ा विधानसभा सीट के लिए हुए उपचुनाव में भारतीय आदिवासी पार्टी के उम्मीदवार की जयकृष्ण पटेल ने जीत दर्ज की तथा इस प्रकार वर्तमान समय में चल रही राजस्थान की 16वीं विधानसभा में भारतीय आदिवासी पार्टी के चार विधायक मौजूद है।

2024 के लोकसभा चुनाव में राजकुमार रोत ने डूंगरपुर-बांसवाड़ा लोकसभा सीट पर जीत दर्ज करने के बाद दक्षिण राजस्थान के जनजातियें क्षेत्र में राजनीति परिदृश्य बदल गया। इस जीत के साथ भील प्रदेश के गठन और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण में वृध्दि का मुद्दा केंद्र में आ गया। रोत ने पूर्व मंत्री और कांग्रेस से बीजेपी में शामिल हुए आदिवासी नेता महेंद्रजीत सिंह मालवीय को 247054 मतों के भारी अंतर से हराया। कांग्रेस का गढ़ रहे बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों के लोकसभा क्षेत्र में आदिवासी अधिकारों की पुष्टि एक नए परिप्रेक्ष्य में देखी जा रही है। The Hindu. (2024)

दक्षिण राजस्थान में भारतीय ट्राइबल पार्टी व भारतीय आदिवासी पार्टी राष्टीय दलों के सामने एक मजबूत विपक्षी दल के रूप में अपने पैर जमा रहा है जो आने वाले समय में राजस्थान की राजनीति में एक प्रमुख राजनैतिक दल के रूप कार्य करने वाले दलों में शामिल होने वाला दल है। पिछले दो विधानसभा चुनाव परिणामों के विश्लेषण से पता चलता है की भारतीय जनता पार्टी व राष्टीय कांग्रेस

पार्टी का अनुसूचित क्षेत्र का वोट बैंक पहले भारतीय ट्राईबल पार्टी और अब भारतीय आदिवासी पार्टी की और जा रहा है। जिससे दक्षिणी राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी व राष्टीय कांग्रेस पार्टी की स्थिति कमजोर हो रही है।

निष्कर्ष-

दक्षिणी राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य में भारतीय आदिवासी पार्टी (BAP) और भारतीय ट्राइबल पार्टी (BTP) का आना एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। दोनों पार्टियों ने आदिवासी समुदायों के मुद्दों को अपनी प्राथमिकता बनाकर राजनीतिक आधार मजबूत किया है, जो इस क्षेत्र के राजनीतिक समीकरणों को बदल रहा है। 2018 के विधानसभा चुनावों में भारतीय ट्राइबल पार्टी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, लेकिन 2023 में भारतीय आदिवासी पार्टी के गठन ने क्षेत्रीय राजनीति में एक नया मोड़ दिया। BAP ने अपने पहले ही विधानसभा चुनाव में तीन सीटें जीतकर यह साबित कर दिया कि वह आदिवासी समुदायों के लिए एक मजबूत राजनीतिक विकल्प बन सकती है। इसके बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में राजकुमार रोत की जीत ने इस पार्टी को और मजबूत किया।

राजस्थान के दक्षिणी हिस्से (मेवाड़ व वागड़) में राष्ट्रीय दलों, विशेषकर भारतीय जनता पार्टी (BJP) और कांग्रेस (INC), का पारंपरिक वोट बैंक कमजोर होता दिख रहा है। पिछले दो विधानसभा चुनावों के परिणाम स्पष्ट रूप से यह संकेत करते हैं कि अनुसूचित क्षेत्रों में राष्ट्रीय दलों का वोट बैंक अब क्षेत्रीय दलों की ओर जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि BAP और BTP ने आदिवासी समुदायों के मुद्दों जैसे शिक्षा, रोजगार, भूमि अधिकार, और सांस्कृतिक पहचान पर ध्यान केंद्रित किया है, जो लंबे समय से उपेक्षित थे। इसके अलावा, इन पार्टियों ने भील प्रदेश के गठन और अनुसूचित जनजातियों के आरक्षण में वृद्धि जैसे विषयों को भी जोरदार ढंग से उठाया है, जो आदिवासी समुदायों के लिए प्रमुख राजनीतिक मुद्दे बन गए हैं।

REFERENCE

[1]. Annual Administrative Report 2012-2013, Election Department Rajasthan, Jaipur ,page no.05

[2]. Barnes, F. R., Gray, A., & Kingsbury, B. Adivasi movements in South Asia. *academia.edu.*

[3]. Bates, C. (1995). Lost innocents and the loss of innocence: Interpreting Adivasi movements in South Asia in Indigenous peoples of Asia. *Association of Asian Studies.*

[4]. Beeman, M., & Chowdhry, G. Imagining the Other: Presentations of India through Social Science Textbooks. *National Social Science Journal Volume 34*, 27.

[5]. Hockings, P. (2011). Ancient Hindu refugees: Badaga social history *1550-1975* (Vol. 6). *Walter de Gruyter.*

[6]. Gurjar, H. S. & Singh, P. (2024). Analysis of Political Parties in the Lok Sabha Elections 2009 to 2019: In the Context of Rajasthan State. *International Journal of Applied Social Science,* Volume 11 (1 & 2), January & February: 69-73.

[7]. Gurjar, H. S. & Singh, P. (2022). Analysis of Results of Legislative Assembly Elections of 2013-2018 in Mewar Region of Rajasthan. *International Research Mirror.* Volume 01 (09), 52-60.

[8]. Jalan, S. (2019). Electoral Delimitation and Geography of Representation in Reserved Constituencies of Rajasthan: A Study in Social GIS. *Governing Council of the Indian Geographical Society*, Page No.75-90.

[9]. Pillai ,Geetha Sunil)2024(. Tribal BAP's Indigenous Political Alliance: A Third Front Against NDA and INDIA Blocs—Can Adivasis Chart Their Own Course? *THE MOOKNAYAK ,Jaipur* Jun 24th, 2024 at 3:57 PM.

[10]. Renfrew, C. (1990). Archaeology and language: the puzzle of Indo-European origins. Cup Archive.

[11]. Saini, Sachin (2024). The Rise of BAP in Tribal land of Rajasthan, *Hindustan Times,* Jun 04,2024 at 05.18 PM.

[12]. Sinha, S. (1987). Tribal polities and State Systems in pre-Colonial eastern and north eastern India. *Calcutta: KP Bagchi & Co.*

[13]. Statistical Report, Election Commission of India.

[14]. The Hindu) .2024(. BAP's victory set to change political landscape in tribal region of southern Rajasthan .- June 06, 2024 10:27 pm IST – Jaipur.

Cite this Article

*राजेश कुमार, हरि सिंह गुर्जर, "दक्षिण राजस्थान मे बदलता राजनीतिक परिदृश्य : विधानसभा चुनाव 2018 व 2023 में भारतीय ट्राइबल पार्टी व भारतीय आदिवासी पार्टी को प्राप्त मतों के सन्दर्भ में", **International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology** (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 4, Issue 1, pp. 32-41, January 2026.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i1.220

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.